तृतीय अध्याय

भीमकथाअमृतम् का सामान्य परिचय

तृतीय अध्याय

"भीमकथाअमृतम् का सामान्य परिचय"

प्रस्तावना :

'भीमकथाअमृतम्' महाकाव्य के रचयिता महाकवि 'रामदास निमेश' जी है। प्रस्तुत काव्यग्रंथ बीसवीं शती के अंतिम दशक का महाकाव्य है। 'भीमकथाअमृतम्' महाकाव्य का सृजन महाकवि ने आधुनिक युग में जन्में भारत के प्रसिद्ध महामानव, भारतीय संविधान के शिल्पी, बोधिसत्त्व भारतरत्न डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर जी के जीवन पर किया है। विवेच्य महाकाव्य की कथा नौ सर्गों में विभाजित है। महाकाव्य की कथावस्तु में महाकवि ने डॉ. अम्बेडकर जी के चरित्र को उजागर करने का सफल प्रयास किया है। अत: हम 'भीमकथाअमृतम्' महाकाव्य की कथावस्तु का सामान्य परिचय निम्नलिखित प्रकार से देखते है।

3.1. प्रथम स्कन्ध :

प्रस्तुत महाकाव्य का प्रारंभ महाकवि ने क्षमा-याचना से किया है। वन्दना में महाकवि ने गुरू के सामने अपना शीश झुकाया है। अपना कार्य सफल होने के लिए गुरू को पथदर्शक मानकर गुरू वन्दना की है।

भीम-कथामृत-महिमा :

भाग में महाकवि ने कहा है कि, भीम-कथा को जो लोग गाते हैं उसके मन में हिंसा, द्वेष और घृणा का नाश होता है। आगे महाकवि कहते है कि -

"श्रद्धा प्रेम प्रतीति से, पाठ करै हर रोज |
ताकी भव बाधा मिटै, जोतित वदन सरोज ||
भीम चरित का पाठ कर, शुरू करै निजकाम |
ऋदि-सिध्दि ताको मिलैं, घटै न घर में दाम ||"[1]

---

[1]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम्, पृ.2

भीम-वन्दना :

भाग में महाकवि ने देश में युग परिवर्तन लानेवाले, शोषित, पीड़ित, शमित, दलित, नारी के उद्धारक डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर जी को वन्दन किया है।

भारत वन्दन :

भाग में महाकवि ने प्रकृति चित्रण के माध्यम से भारत देश की विविधता का वर्णन किया है। साथ ही देश के सभी राज्यों की विशेषताओं का वर्णन प्रस्तुत भाग में किया है।

सामाजिक-संक्रमण :

भाग में प्राचीन काल में आर्य लोगों के आगमन का वर्णन महाकवि ने किया है। आर्य लोगों ने कपट नीति के आधार पर देश के राजाओं के राज्य छिन लिए। और समाज के लोगों को ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र आदि चार वर्णों में बांट दिया। आर्य लोगों ने कूट नीति के आधार पर देश को गुलाम बनाया। इसके बाद अंग्रेजों के आगमन का वर्णन महाकवि ने किया है।

पारिवारिक - पृष्ठभूमि :

भाग में महाकवि निमेश जी ने डॉ. अम्बेडकर जी के परिवार की जानकारी दी है। एक साधू के द्वारा रामजी और भीमाबाई को चौदहवे बच्चे के रूप में एक अलौकिक पुत्र होने की भविष्यवाणी की थी। इस पक्ष पर प्रकाश डालते हुए महाकवि कहते है कि-

"होगा तेरा पुत्र वह, वल विद्या आगार।
बदलै पथ इस देश का, करै नारी उद्धार ॥
करै नारी उद्धार, दलित की फाँसी काटै।
राष्ट्र भक्त कहलाय, जगत को बुद्धी बाटै ॥
मथ मथ ग्रंथ जगत के सारे, पहिन ज्ञान का चोंगा।
मारै मान कुटिल विप्रों के, ऐसा सुत वह होगा ॥"[1]

---

[1]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम्, पृ.16

भीमावतार :

भाग में डॉ. अम्बेडकर जी के जन्म का वर्णन महाकवि ने इस प्रकार किया है -

"चौदहवीं संतान पिता की, चौदहवाँ रत्न कहाया है।
चौदहवीं तिथि को वह जन्मा, अद्‌भुत संयोग बताया है ॥
दृष्ट-पुस्ट अति सुन्दर बालक, कामदेव बन आया है।
चन्द्र कला सम भीमराव सुत, विकसे रत्न सवाया है ॥"[1]

इसके बाद महाकवि ने रामजी के संतानों की जानकारी दी है। सन् **1893** ई. को रामजी सेना से निवृत्त होकर सतारा के लोक निर्माण विभाग में नौकरी करने लगे। वहाँ के स्कूल में रामजी ने अपने बच्चों को भर्ती किया। इसके बाद डॉ.अम्बेडकर की माता भीमाबाई की मृत्यु हो गई। इसके कारण रामजी ने जीजाबाई के साथ दूसरा विवाह किया। स्कूल में पढ़ते समय भीमराव का उपनाम 'आंबावडेकर' था। यह उपनाम उच्चारण की सुविधा से अच्छा न लगने के कारण एक ब्राह्मण अध्यापक ने इसे बदलकर 'अम्बेडकर' रख दिया। भीमराव को गणित और अंग्रेजी ये विषय प्रिय लगते थे। एक दिन अध्यापक ने भीमराव को फलक पर गणित हल करने को कहा। उसी समय स्कूल के बच्चे चिल्लाने लगे क्योंकि उन बच्चों ने अपना भोजन फलक के पास रखा था। उस भोजन को भीमराव के छू जाने से वह अपवित्र होगा। इस घटना के बाद भीमराव ने मन में यह दृढ निश्चय किया कि -

"गहरी चोट हृदय पर खाई | तब शिक्षा इच्छा गहराई ॥
घटा नहीं उत्साह भीम का | दृढ़ निश्चय बन गया भीम का ॥
अति उँचि शिक्षा में पाऊँ | तब जाकर मैं भीम कहाऊ ॥
शिक्षित बन संघर्ष चलाऊँ | जाति पाति का कोठ मिटाऊ ॥"[2]

सन् **1907** ई. को भीमराव मैट्रिक की परीक्षा पास हो गए।इस खुशी के कारण एक स्वागत सभा का आयोजन किया गया। उस सभा में कृष्णाजी अर्जुन केलुस्कर जी ने भीमराव को अपने द्‌वारा लिखा ग्रंथ 'गौतम बुद्‌ध' भेट के रूप में दिया। वाद में भीमराव

---

[1]. रामदास निमेश -भीमकथाअमृतम्, पृ-18
[2]. वही, पृ. 26

की अगली शिक्षा के वारे में रामजी और उनमें विचार-विमर्श हुआ। इसके वाद नौकरी छूटने के वाद रामजी ने अपने वच्चों को मुंवई के 'एल्फिन्स्टन' कॉलेज में भर्ती किया।

इस प्रकार की जानकारी का वर्णन महाकवि निमेश जी ने 'भीमकथाअमृतम्' महाकाव्य के प्रथम स्कन्ध में किया है।

3.2 द्वितीय स्कन्ध :

द्वितीय स्कन्ध के प्रारंभ में महाकवि निमेश जी ने गुरू को वन्दन करते हुए कहा है कि -

"गुरू ही शिव है, गुरू ही शक्ति, गुरू ही ज्ञानसागर।
बिना गुरू के वर दिये, कैसे हो उद्धार ॥"[1]

और अगली कथा लिखने के लिए गुरू को ज्ञान दान करने की बात कही है।

सामाजिक व्यवस्था :

भाग में कवि ने समाज में होनेवाली जातिभेद, वर्णाश्रम, बालविवाह, सतीप्रथा आदि कुप्रथाओं का वर्णन किया है। इसके वाद भीमराव के विवाह का वर्णन मिलता है। बाद में समाज में होनेवाली अनेक कुप्रथाओं के विरूद्ध कार्य करनेवाले समाजसुधारकों का वर्णन महाकवि ने किया है। भीमराव अम्वेडकर की वीमारी का वर्णन और उन्हें वडौदा के महाराजा के द्वारा पच्चीस रूपया छात्रवृत्ति देने का वर्णन महाकवि ने किया है। कॉलेज में भीमराव को जातिप्रथा के कारण कष्ट उठाने पड़े इसका वर्णन मिलता है।

स्व-निर्माण :

भाग में डॉ.अम्वेडकर जी ने घर-गृहस्थी वितानें के लिए एक चाल में दो कमरों का मकान किराए पर लिया। तथा सन् 1912 ई. में वी.ए. की उपाधि प्राप्त की और आगे 'सिद्धार्थ महाविद्यालय' का निर्माण किया। उसी समय ब्रिटिशों द्वारा भारतीय लोगों पर अत्याचार होने लगे थे। इसका भीमराव अम्वेडकर जी ने मुकावला किया। तथा उन्होंने 'इवोल्यूशन ऑफ प्रिविन्शियल फिनान्स इन ब्रिटिश इंडिया' नामक शोध निवंध लिखा। सन्,

---

[1]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम्, पृ. 31

1910 ई. को 'इंडियन प्रैस एक्ट' बनाया, इसका वर्णन महाकवि निमेश जी ने किया है।

भीमराव अम्बेडकर जी स्नातक होने के वाद वडौदा के महाराजा की रियासत में लेफ्टीनेन्ट के पद पर नौकरी करने लगे। पिता की तवीयत बिगड जाने के कारण वे मुंबई आए लेकिन फरवरी, 1913 ई. को पिता की मृत्यु हो गई। बाद में बडौदा के महाराजा से विदेश में अगली शिक्षा ग्रहन करने की बात की। और दि. 13 जुलाई, सन् 1921 ई. को उन्होंने न्यूयार्क के विश्वविद्यालय में अपना नाम दर्ज किया। तीन वर्ष तक वहां अध्ययन करके एम.ए. की उपाधि प्राप्त की साथ ही पीएच.डी. का प्रबंध लिखा। सन् 1924 ई. को पीएच.डी. उपाधि से उन्हें सम्मानित किया। बाद में लंदन में विधि की शिक्षा लेने के लिए गए और दि. 21 अगस्त, सन् 1917 ई. को स्वदेश वापस आए। इसके बाद उनके दो पुत्रों रमेश और गंगाधर की मृत्यु हो गई। फिर बडौदा में शिक्षा सचिव के पद पर कार्य किया। वहां पर जाति के कारण उन्हें अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। इसके कारण मुंबई वापस लौटने का निर्णय लिया। उन्हीं दिनों विमाता जिजाबाई की बीमारी के कारण मृत्यु हो गई। इसके बाद अम्बेडकर जी ने एक कॉलेज में अर्थशास्त्र के प्रोफेसर के पद पर कार्य किया। कुछ रूपये बचाकर बार-एट-लॉ तथा डी.एस.सी. की पढ़ाई करने का निश्चय किया। उसी समय उनके बड़े भाई की मृत्यु हुई। आदि सारी बातों का वर्णन महाकवि निमेश जी ने प्रस्तुत स्कन्ध में किया है।

3.3 तृतीय स्कन्ध :

तृतीय स्कन्ध के प्रारंभ में महाकवि निमेश जी ने डॉ.वावासाहब अम्बेडकर की वन्दना की है। इसके वाद भीमराव ने लंदन जाने की वात अपनी पत्नी से की। इसके वाद महाकवि ने प्रकृति के माध्यम से पति के वियोग का सुंदर चित्रण किया है।

लन्दन गमन :

भाग में महाकवि ने अम्वेडकर के लन्दन जाने की तैयारी का वर्णन किया है। इसके वाद महात्मा ज्योतिवा फुले के द्वारा सत्यशोधक समाज की स्थापना का वर्णन किया है। शाहू महाराज के द्वारा जाति के आधार पर निर्माण किए स्कूलों, छात्रावासों का वर्णन

महाकवि ने किया है। इसके वाद सितम्वर, सन् 1920 ई. को डॉ. अम्वेडकर लन्दन गए। वहा एक महिला के घर में पेइंग गेस्ट वनकर रहे। लन्दन के विद्यालय में नाम दर्ज करने के वाद वे वहा के एक म्यूजियम में अध्ययन करने के लिए जाते थे। लन्दन में अर्थाभाव के कारण उन्हें भोजन नहीं मिलता था। लेकिन वे भूखे रहकर अध्ययन करते रहे। इसका वर्णन महाकवि ने निम्नलिखित प्रकार से किया है।

"लाभ नहीं कुछ उससे कहकर | पढ़ता धा मैं भूखे रहकर ||
लन्दन में की कठिन तपस्या | फिर भोजन की बनी समस्या ||
सज्जन परिचित भारतवासी | कुछ पापड दे गये प्रवासी ||
इक कप चाय व पापड खाकर | करता अध्ययन रात रात भर||"[1]

डॉ. अम्वेडकर जी ने दलितों में जागृति, क्रांति, शिक्षा, कर्तव्य बोध, मानवता की ज्योत जगाने हेतु 'मूकनायक' इस पत्रिका का प्रकाशन किया। जून, सन् 1921 ई. में लन्दन विश्वविद्यालय से मास्टर ऑफ सायन्स की उपाधि प्राप्त की। अक्तूबर, सन् 1922 ई. को 'प्राब्लम ऑफ द रूपीज' नामक थीसिस लिखा। इसके बाद डी. एस.सी. और बार. एट. लॉ. की डिग्री प्राप्त की। बाद में कम समय में उन्होंने संस्कृत, जर्मन, फ्रेंच, हिंदी, अंग्रेजी इन भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया।

भारतीय समाज व्यवस्था में जाति व्यवस्था की कड़ी मजबूत थी। इसके कारण डॉ. अम्वेडकर बैरिस्टर होने के बाद उनके पास एक भी मुवक्किल नहीं आया। इसका वर्णन महाकवि ने इस प्रकार किया है -

"यद्यपि उत्तम वह विधि अधिवक्ता | तद्पि मुवक्किल कोई न मिलता ||
महिनों भटके न्यायालय में | कोढ़ छुत का न्यायालय में ||
न्याय कहाँ पर था अछूत को | आसन मूठ न दैं सपूत को ||
तिलक और रानडे, भाई | भण्डारकर विद्वान कहाई ||
इनसे उत्तम भीम जी, विद्या, वुद्धि आगार |

---

[1]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम्, पृ. 70

हुये तिरस्कृत देश में, जाति वनी आधार ॥"[1]

इसके वाद उनके पास एक मुवक्किल आया। उसे फाँसी की सजा सुनाई थी। वह उनके वकील जीवन का प्रथम केस था। इस केस में उन्होंने दिन-रात मेहनत करके विजय प्राप्त की।

धार्मिक उतार चढ़ाव :

भाग में महाकवि ने तीन सौ साल पूर्व के वैदिक धर्म का वर्णन किया है। इसमें समाज जिन चार वर्णों में विभाजित था उसका वर्णन मिलता है। उस समय में यज्ञों के नामपर पशुओं की बलि चढ़ाकर उसका माँस सेवन किया जाता था। इसके कारण धर्म का ऱ्हास हो गया। और समाज में अनेक प्रकार की कुप्रथाओं का प्रचलन होने लगा। उसी समय कपिल वस्तु के शाक्य कुल के शुद्धोधन राजा को सिद्धार्थ नामक पुत्र का जन्म हुआ। और उनके द्वारा बौद्ध धर्म का उदय हुआ। इस धर्म का प्रचार-प्रसार अनेक देशों में होने लगा। आदि सारी बातों का वर्णन महाकवि निमेश जी ने सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया है।

युग पुरूष :

भाग में महाकवि निमेश जी ने ब्रिटिश लोगों की शासन व्यवस्था का वर्णन किया है। ब्रिटिश लोग भारतीय लोगों के साथ अमानवीय अत्याचार करते थे। इसके कारण भारतवासी दु:खी थे। उसी समय भारत को आझादी दिलाने के लिए सन् **1825** ई. को काँग्रेस की स्थापना हुई। अनेक लोगों ने भारत देश में फैली जातिव्यवस्था को दूर करने के प्रयास किए। लेकिन वे लोग दलितों की पीड़ा समझ नहीं सके। उसी समय सन् **1925** ई. को अम्बेडकर जी ने एक सभा का आयोजन किया। उस सभा में पूरे प्रान्त के दलित लोग उपस्थित रहे। उन लोगों की दशा का वर्णन महाकवि ने इस प्रकार किया है -

"पूर्ण प्रान्त के जुड़े दलितजन | नंगे अधनंगे क्षीण वदनतन ॥
फटे पुराने वस्त्र घिनौने | सूखे तन अरू उदर थे दौने ॥
पिचके गाल, कपाल कराला | नरकलाल और मुण्ड़माला ॥"[2]

---

[1]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम्, पृ. 75
[2]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम्, पृ.87

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

इस सभा के वाद दलित लोगों को अधिकार दिलाने के लिए अम्बेडकर जी ने दि. 20 जुलाई, सन् 1924 ई. को और एक सभा का आयोजन किया।

वायकोम सत्याग्रह :

भाग में महाकवि ने डॉ. अम्बेडकर के द्वारा किए सत्याग्रहों का वर्णन किया है। एक सभा में डॉ.अम्बेडकर जी ने दलितों को अन्याय के विरूद्ध लढ़ने की सलाह दी। दलितों को पिने के लिए पानी मिले इसलिए महाड के चवदार तालाब पर सत्याग्रह किया। सत्याग्रह के कारण सवर्ण लोगों ने दलितों पर हमला किया। इसका वर्णन महाकवि ने इस प्रकार किया है -

"भीमराव हुंकार लगाई | जनता उमडि जोश भरिलाई ||
प्रथम पिया जल भीमराव ने | बहुरि पिया सब महानुभाव ने ||
अभी समापन यज्ञ न कीन्हा | विप्र वर्ग ने हमला कीन्हा ||
और सवर्ण सब मिलकर आये | दलितों पर हथियार चलायें ||
हुयी विकट चवदार लड़ाई | छुत अछूत जख्म सब खाई ||"[1]

इसके बाद अम्बेडकर के द्वारा चलाए गए 'अम्बादेवी मंदिर प्रवेश सत्याग्रह', 'मनुस्मृति का दहन', 'कालाराम मंदिर प्रवेश सत्याग्रह' आदि का वर्णन महाकवि रामदास निमेश जी ने सुंदर रूप से किया है।

3.4 चतुर्थ स्कन्ध :

चतुर्थ स्कन्ध का प्रारंभ महाकवि निमेश जी ने वन्दना से किया है। इसमें महाकवि ने ईसा, रहीम, गौतम आदि को वन्दन किया है।

द्विपक्षीय संघर्ष :

भाग में महाकवि ने डॉ. अम्बेडकर के द्वारा किए कार्यों का वर्णन किया है। इसमें सोलापुर की पालिका में आयोजन की सभा का वर्णन, सन् 1925 में हायस्कूल के छात्रों को बनाए छात्रावास का वर्णन, महार हॉकी क्लव का निर्माण आदि कार्यों का वर्णन महाकवि

---

[1]. वही, पृ. 92

ने किया है। केलुस्कर ने सिडनहॅम कॉलेज में अम्बेडकर को प्रिंसिपल पद पर नियुक्त करने का सुझाव दिया था। उसे उन्होंने ठुकरा दिया। डॉ. अम्बेडकर जी के द्वारा किए जातिनिर्मूलन कार्यों के कारण हिंदू लोग घबरा गए। इसके कारण ब्राह्मणों ने अखवारों में अम्बेडकर जी के विरोध में लिखना शुरू किया। इसका प्रतिकार करने हेतु डॉ.अम्बेडकर जी ने 'बहिष्कृत भारत' पत्रिका का निर्माण किया। इसके बाद पूना में बुलाई सभा में डॉ.अम्बेडकर जी ने दलितों को जो बात कही इसका वर्णन महाकवि ने इस प्रकार किया है -

"शिक्षित बनो, संगठित होकर | ईर्ष्या, द्वेष सभी तुम खोकर ||
दूर दूर गावों में जाओ | अपने जन तुम आप जगाओ ||
नयी चेतना मान जगाओ | नारी जगत को साथ उठाओ ||
सुरा व्यसन घृत दुखकारी | भूप युधिष्ठर द्रोपदी हारी ||"[1]

राजनीतिक संघर्ष :

भाग में महाकवि ने अमरावती के अम्बामाता के मंदिर प्रवेश की बात का वर्णन किया है। इसके कारण डॉ. अम्बेडकर जी 13 नवम्बर को अमरावती पहुँच गए। लेकिन वहाँ पर मंदिर के समिती प्रधान ने उन्हें तीन महिने का समय माँगा। इसके कारण लोगों के साथ विचार विमर्श करने के बाद सत्याग्रह को विसर्जित किया। आदि सारी वातों का वर्णन महाकवि ने सुंदर ढंग से किया है।

सायमन आयोग और बाबासाहब :

भाग में कपड़ा मिल मजदूरों के द्वारा किए हड़ताल का वर्णन किया है। इसके बाद सन् 1929 ई. के अप्रैल महिने में रत्नागिरी के चिपलून के सम्मेलन में डॉ. अम्बेडकर जी ने लोगों से जो बात कही उसका वर्णन महाकवि ने इसप्रकार किया है -

"फिर तुम अपने कर्म सुधारो | पढ़ने का व्रत तुम सब धारो ||
विद्या बुद्धि विकास की जननी | स्वच्छ वास, हो निर्मल करनी ||
खेत और खलियान तुम्हारे | गृह उद्योग कर्म शुचि सारे ||

---

[1]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम्, पृ. 111

पराधीनता में दुख भारी | दास रहे गति हो न तुम्हारी ||"[1]

इसके वाद अंग्रेजो की दमन नीति का वर्णन महाकवि ने किया है। डॉ.अम्वेडकर जी के द्वारा नागपुर में किए भाषण का वर्णन महाकवि ने इस प्रकार किया है-

"जव तक देश स्वराज न आवें | भारत अंगरेज न जावें ||
तव तक उन्नति पथ न मिलेगा | सुख समृद्धी रथ न बढ़ेगा ||
हमको अपनी राह बनानी | सरकार विदेशी मित्र भगानी ||
जहाँ तक समता भ्रातृ भाव की | माँग हमारी नीति न्याय की ||"[2]

प्रथम गोलमेज सम्मेलन:

भाग में महाकवि ने अंग्रेजों द्वारा आयोजन किए गोलमेज सम्मेलन का वर्णन किया है। इस सम्मेलन में ब्रिटिश राजनेता, भारत के नेता, राज घराने के लोग, विविध देशों के शासक लोग आए थे। इस सभा में डॉ. अम्वेडकर जी ने जो बात कही इसका वर्णन महाकवि ने इस प्रकार किया है -

"सुनो साथियों मित्र हमारे | दलित लोग हैं मुझको प्यारे ||
उनसे प्यारा देश हमारा | माता सम हम सवको प्यारा ||
सबसे पहले मांग हमारी | मां स्वतंत्र हो प्रथम हमारी ||
मित्र विदेशी आदेश तुम्हारा | होता था कर्तव्य हमारा ||"[3]

डॉ.अम्वेडकर की बातों को सुनकर उनकी आलोचना करने वाले लोगों को भी वे प्यारे लगने लगे।

लन्दन में राजनैतिक सम्पर्क :

भाग में डॉ. अम्वेडकर जी के द्वारा दलितों के हक्कों के लिए किए परिश्रम का वर्णन महाकवि ने किया है। उन्होंने दलितों की स्थिति का वर्णन निम्नलिखित पंक्तियों के द्वारा किया है -

---

[1]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम, पृ. 118
[2]. वही, पृ. 124
[3]. वही, पृ. 131

"है अछूत पशु से भी वदत | पशु सम जाति घुमन्तू वेघर ||

धन, धरती, व्यवसाय काम का | हक इनको है नहीं नाम का ||

नंगे रहते रात दिन, सर्दी, गर्मी बरसात |

बिना अन्न अरू दूध के, शिशु भूखे मरिजात||"[1]

इसके बाद भारत की आजादी के साथ दलितों को भी सारे हक मिलने की बात का वर्णन महाकवि ने किया है।

भारत वापसी :

भाग में महाकवि ने डॉ. अम्बेडकर जी के भारत वापस आने का वर्णन किया है। इसके बाद काँग्रेस के लोगों ने अहमदाबाद के स्टेशन पर अम्बेडकर जी को काला झंड़ा दिखाकर उनपर देशद्रोही होने का आरोप लगाया।

इस प्रकार की सारी जानकारी का वर्णन महाकवि निमेश जी ने चतुर्थ स्कन्ध में किया है।

3.5 पंचम स्कन्ध :

प्रस्तुत स्कन्ध का प्रारंभ महाकवि निमेश जी ने वन्दना से किया है। तथा उन्होंने डॉ. अम्बेडकर के द्वारा किए कार्यों का उल्लेख किया है।

संघीय ढाँचा समिती के सदस्य :

भाग में महाकवि ने लन्दन में होने वाली दूसरी गोलमेज परिषद में निमंत्रित सदस्यों का वर्णन किया है। दि. 6 अगस्त, सन् 1931 ई. को गांधीजी ने डॉ. अम्बेडकर जी को पत्र भेजकर बात करने की सलाह ली। उसमें अम्बेडकर जी ने जो बात कही उसका वर्णन महाकवि ने इस प्रकार किया है -

"अन्तर की आवाज सुनी जो | विश्व मंच पर गयी गुनी वो ||

इससे भा उपकार देश का | पर न हितैषी कहूँ देश का ||

सदियों से जो गये सताये | उनको यदि अधिकार दिलाये ||

---

[1]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम, पृ.136

तो मैं मानव भक्त कहाऊँ | सार्थक नाम तभी कर पाऊँ ||"[1]

इस वात के वाद गांधी जी की अवस्था असहनीय हुई और वे घवरा गए।

लन्दन-गमन :

भाग में महाकवि ने लन्दन में होनेवाली गोलमेज सभा के लिए जानेवाले सदस्यों का वर्णन किया है। तथा उन प्रतिनिधि लोगों को छोड़ने आए लोगों का वर्णन किया है।

द्वितीय गोलमेज सभा में :

भाग में महाकवि ने लन्दन में हुई गोलमेज सभा का वर्णन किया है। इस सभा में हिंदू, मुस्लिम, सिक्ख आदि नेता आए थे। इसके साथ ही विज्ञान, अर्थशास्त्र, नीति विशारद, शिक्षित महिला उपस्थित थे। गांधी ने सभा भवन में अपने आपको सबका प्रतिनिधि बताया। इसका वर्णन महाकवि ने इसप्रकार किया है -

"मुस्लिम नेता साथ हमारे | सिक्ख भी सारे साथ हमारे ||
दलित अरू हिंदू अलग नहीं है। अछूत प्रतिनिधि भी हम ही है ||
सबका प्रतिनिधि कांगरेस है | सारा भारत एक देश है ||
एक शक्ति हो ध्वजा उठाई | एक प्राण हो लड़े लड़ाई ||
दलितों को अधिकार अलग से | सहन नहीं होंगे सच हमसे ||
हिंदू धर्म दलित अनुयायी | दलित सुधार किया अधिकाई ||"[2]

इस पंक्तियों के आधार पर कहा जा सकता है कि, गांधी जी ने अपने आपको भारत देश का नायक वनाने की वात की है।

भीम गर्जना :

भाग में गांधीजी के वक्तव्य का डॉ.अम्वेडकर पर हुए असर का वर्णन महाकवि ने किया है। इसके कारण डॉ. अम्वेडकर जी ने भरी सभा में भारत के सभी राज्यों को विलीन करके एक सार्वभौम गणराज्य बनाने की वात कही। इसपर बिकानेर के राजा ने विरोध किया। आदि सारी वातों का वर्णन महाकवि ने किया।

---

[1]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम्, पृ.151
[2]. वही, पृ.158

विश्व सम्राट द्वारा भोज :

भाग में महाकवि ने विश्व विजेता सम्राट द्वारा आयोजित किए भव्य भोज का वर्णन किया है। इसके बाद सम्राट और अम्बेडकर के वीच हुई वातचीत का वर्णन मिलता है। सभी प्रतिनिधियों के दस्तखत होने के बाद सम्मेलन समाप्त हो गया। दि. **29** जनवरी, सन **1932** ई. को डॉ. अम्बेडकर मुंबई वापस आए। उसी वक्त सारे लोगों ने उनका अभिनंदन और स्वागत किया।

कम्युनल अबार्ड :

भाग में अम्बेडकर के द्वारा किए भारत भ्रमण का वर्णन किया है। डॉ. अम्बेडकर जी को लगता था कि राष्ट्र धर्म निरपेक्ष हो। तथा राष्ट्र के सभी लोगों को सुख सुविधा मिले और सभी के लिए कानून, विधि के नियम हो। इसके बाद देश में सांप्रदायिकता फैल गई। इसके कारण अनेक लोगों को जेल में डाल दिया गया।

पूना पैक्ट :

भाग में डॉ. अम्बेडकर ने भारत के दलितों के लिए राजनीति में आरक्षित स्थान की माँग की। इसके कारण गांधी जी ने आमरण अनशन रखा। यह खवर काँग्रेस के लोगों ने अम्बेडकर जी को बताकर गांधी जी के प्राण बचाने की बात कही। तभी संयुक्त चुनाव व्यवस्था में दस प्रतिशत आरक्षण की बात मंजूर कर दी और संधिपत्र पर हस्ताक्षर हो गए। इसके बाद गांधीजी ने अपना व्रत तोड़ा। इस प्रकार की वातों का वर्णन महाकवि ने विवेच्य भाग में किया है।

3.6 षष्टम स्कन्ध :

प्रस्तुत स्कन्ध के प्रारंभ में महाकवि निमेश जी ने डॉ. बाबासाहव अम्बेडकर जी की वन्दना करते हुए कहा है कि,

"मेरे गुरू युग पुरूष हे, भीमराव वागीश।
कोटि कोटि वन्दन करूँ, धरूँ चरण में शीश ॥"[1]

---

[1]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम्, पृ.190

सतपथ :

भाग में महाकवि ने गोलमेज की तीसरी सभा का वर्णन किया है। इस सभा में ब्रिटिश महाप्रभु की बातों का वर्णन महाकवि निमेश जी ने इस प्रकार किया है -

"दलित वर्ग की हिस्सेदारी | केन्द्रीय संसद जाय विचारी ||
ब्रिटिश महाप्रभु कटु बतलाये | दलित उपेक्षित, हक ना पाये ||
अम्बेडकर मन धक्का लगा | दुष्ट महा अंगरेज अभागा ||
दोहरी नीति सदाँ अपनायें | फूट डालकर राज्य चलायें ||"[1]

इसके बाद संघ की शासन व्यवस्था, वोटों के अधिकार आदि कार्यों की जानकारी का वर्णन महाकवि ने किया है। तथा अम्बेडकर जी को संविधान की रचना करने का कार्य सौंप दिया गया।

बाबासाहब का पुस्तकालय :

भाग में महाकवि ने डॉ. अम्बेडकर के द्वारा किए कार्यों का वर्णन किया है। डॉ.अम्बेडकर ने चार वर्ष तक अथक, कमर तोड परिश्रम, लगन, भूख-प्यास को भूलकर बड़ी विनम्रता से राष्ट्रीय कार्य मानकर संविधान निर्माण करने का कार्य किया। यह काम करते वक्त उन्होंने दुर्लभ तथा अच्छे ग्रंथों का संग्रह करके ग्रंथालय का निर्माण किया। तथा 19 दिसम्बर को संयुक्त समिती के रिपोर्ट को प्रकाशित किया।

पत्नी-निधन :

भाग में महाकवि ने डॉ. अम्बेडकर की पत्नी रमाबाई की बीमारी का तथा मृत्यु का वर्णन किया है। इसके बाद दि. 1 जून, सन् 1935 ई. को अम्बेडकर जी लॉ कॉलेज के प्रिन्सीपल बने और उस कॉलेज की प्रगति कर दी। वे कभी-कभी सोचते थे कि -

"कभी सोचते जज बन जाऊँ | राजनीति से मैं हट जाऊँ ||
पुन: हृदय में भाव पनपते | विधि विशेष से हैं हक मिलते ||
राजनीति से यदि हट जाऊँ | तो विधान कैसे रच पाऊँ ||

---

[1]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम्, पृ. 195

बिना विधान मिलहि हक कैसे | विन हक दलित उठेंगे कैसे ||"[1]

इसके वाद अक्तूवर, सन् 1935 ई. को एक महासभा में डॉ. अम्वेडकर जी ने हिंदू धर्म त्यागने की घोषणा की। इसका वर्णन महाकवि ने निम्नलिखित प्रकार से किया हैं -

"हिन्दू अव हम नहीं मरेंगे | धर्म शीघ्र प्रिय हम बदलेंगे ||
धरम तुम्हारा तुम्हें सुहावे | हमको तो ये दास बनावें ||
धर्मश्रेष्ठ हम उसको माने | जन जन में अन्तर ना जाने ||"[2]

अम्वेडकर ने हिंदू धर्म त्यागने की बात के बाद विविध धर्मों के धर्मगुरू ने उन्हें अपने-अपने धर्म की ओर आकृष्ठ करने के प्रयास किए।

जाति पांत तोडक मण्डल :

भाग में महाकवि ने हिंदू धर्म में प्रचलित जाति प्रथा को समाप्त करने के लिए अम्वेडकर जी के द्वारा किए प्रयासों और भाषण का वर्णन किया है। अम्वेडकर विश्व के विद्वानों को चुनौती देते है कि,

"दावा मेरा विश्व में, यदि कोई विद्वान।
सिद्ध करे रचना करी, जात पांत भगवान ||"[3]

मुंबई विधान सभा का प्रथम चुनाव :

भाग में महाकवि ने मुंवई के चुनाव की तैयारी का वर्णन किया है। तथा इस चुनाव में अम्वेडकर जी ने लेवर पार्टी के द्वारा पौने दो सौ सीटों को जीत लिया। और दि. 9 जुलाई, सन् 1933 ई. को मंत्री परिषद की शपथ दिलाई।

3.7 सप्तम स्कन्ध :

सप्तम् स्कन्ध के प्रारंभ में महाकवि ने गुरू को वन्दन किया है। तथा अम्वेडकर को लोगों ने उनके कार्यों के कारण युग पुरूष के रूप में स्वीकार करने की बात का वर्णन किया है।

---

[1]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम्, पृ.213
[2]. वही, पृ. 215
[3]. वही, पृ.226

द्वितीय विश्व युद्ध एवं भारत :

भाग में महाकवि ने विश्व में घटित द्वितीय विश्व युद्ध का वर्णन किया है। उस युद्ध में ब्रिटिश लोगों ने भारत को जर्मन के साथ लढ़ने की वात कही। उसी वक्त भारतीय नेताओं ने उनका साथ न देने की बात की। इसके वाद महाकवि निमेश जी ने डॉ. अम्वेडकर के मत को स्पष्ट करते हुए कहा है कि -

"बाबा साहब निजमत दीना | अंगरेजों से जर्मन हीना ||
यदि हारैं अंगरेज लड़ाई | जर्मन स्वामी जाय कहाई ||
बना हुआ सब काम हमारा | असफल हो संघर्ष हमारा ||
दीर्घकाल तक दास रहेंगे | जर्मन संग पुनि संघर्ष करेंगे ||
यदि ब्रिटेन को जीत दिलाये | आजादी हम जल्दी पायें ||"[1]

इसके बाद डिफेन्स एक्ट के आधार पर संघर्ष जारी रखकर विदेशी चिजों को जलाया गया। इसके कारण चारों और उपद्रव मच गया और स्वतंत्र सेनानी लोगों को बागी कहकर जेल में डाला गया।

ऊर्ध्वगामी सोपान :

भाग में ब्रिटिश सरकार ने अपनी सेना में अछूतों को भरती करके ईस्ट इंडिया का युद्ध जीत लेने का वर्णन मिलता है। तथा उन्होंने सेना में अछूत लोगों के महार बटालियन के निर्माण का वर्णन किया है। इसके बाद कार्यकारिणी परिषद का निर्माण और जिन्ना के द्वारा स्वतंत्र पाकिस्तान वनाने की माँग का वर्णन किया है। इसके बाद महाकवि ने भारत की राजधानी दिल्ली के प्रसिद्ध स्थानों का वर्णन इस प्रकार से किया है।

"वायसरॉय भवन की महिमा | वैभव, कला ज्ञान की गरिमा ||
इण्डिया गेट बुलन्द कहाई | बलिदानों की कथा लिखाई ||
लाल किला इतिहास वताये | मुगल काल की गरिमा गाये ||
जामा मस्जिद चौक चाँदनी | निशी दिन गूँजे राग रागिनी ||"[2]

---

[1]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम्, पृ.242
[2]. वही, पृ. 256

इसके वाद दि. 14 अप्रैल, 1942 ई. को अम्वेडकर जी का जन्मदिन उनके अनुचरों के द्वारा बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इसका वर्णन महाकवि ने किया है।

सर्वोच्च कार्यकारिणी के सदस्य :

भाग में महाकवि ने सर्वोच्च कार्यकारिणी के सदस्यों के वारे में जानकारी दी है। इन सदस्यों में डॉ. अम्वेडकर जी को भी स्थान दिया गया। इसके बाद न्याय निकेतन के उच्च अधिकारी ने अम्वेडकर जी को न्यायाधीश बनने का नियुक्ति पत्र भेज दिया। लेकिन उसको उन्होंने ठुकरा दिया। बाद में वायसराय ने उन्हें श्रम मंत्री बनाने का सुझाव दिया।

श्रममंत्री :

भाग में डॉ. अम्वेडकर जी ने श्रममंत्री बनने के बाद श्रमिकों की पीड़ा को खत्म करने का संकल्प किया। एक सम्मेलन में श्रमिक लोगों को सभी सुविधा दिलवाने की बात कही। इसके बाद छात्रों के युनियन की सभा बुलाई। शिक्षा नीति में तकनीकी, वैज्ञानिक तथा औद्योगिक क्षेत्र की जानकारी छात्रों को होने संबंधी विचार अम्वेडकर जी ने स्पष्ट किए। इसके साथ ही चुनाव व्यवस्था से संबंधित पक्ष का वर्णन करते हुए महाकवि कहते है कि -

"संघीय प्रादेशिक दोनों धारा | समुचित हो प्रतिनिधित्व हमारा ||
कार्यकारिणी जाई बनाई | सवके प्रतिनिधि लेकर भाई ||
धारा सभा देश में जो हैं | जनसंख्या पर प्रतिनिधि तो हैं ||
आजाद देश में करो व्यवस्था | संविधान में उचित व्यवस्था ||"[1]

बाबा और संविधान समिती अन्तरिम सरकार का गठन :

भाग में महाकवि ने जून के प्रथम सप्ताह में बुलाई सभा का वर्णन किया है। उस सभा में दलितों पर होने वाले अत्याचारों को बन्द करने की सलाह दी। दि.20 जून, सन् 1946 ई. को डॉ. अम्वेडकर जी ने 'पिपल एज्यूकेशन संस्था' की स्थापना की और 'सिद्धार्थ कॉलेज' का निर्माण किया। अम्वेडकर जी ने 'शुद्र कौन थे ?' इस ग्रंथ का प्रकाशन किया। इसके वाद दि. 9 दिसम्वर, सन् 1946 ई. संविधान समिती की सभा में राजेंद्र वावू को अध्यक्ष

---

[1] . रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम्, पृ.279

वनाया गया। इस प्रकार महाकवि ने प्रस्तुत स्कन्ध में डॉ. अम्वेडकर जी के द्वारा किए कार्यों का वर्णन किया है।

3.8 अष्टम् स्कन्ध :

महाकवि रामदास निमेश जी ने प्रस्तुत स्कन्ध के प्रारंभ में डॉ. अम्वेडकर जी की स्तुति की है।

तीन जून को वायसराय माऊंट बेटन भारत में आए और उन्होंने अपनी योजना बनायी।इसके बाद डॉ. अम्बेडकर जी ने सभी राज्यों की स्थापना करके एक सार्वभौम राष्ट्र का निर्माण करने की बात कही। दि. 22 जुलाई को तिरगें झंड़े का निर्माण किया। उस झंड़े के मध्य में अशोक चक्र को स्थान दिया गया। और भारत देश की आजादी का कानून बनाया गया। इसके बाद डॉ.अम्बेडकर जी काँग्रेस के सांसद बने और उन्हें विधि मंत्री का पद दिया। दि. 29 अगस्त को मसौदा समिती का निर्माण किया। उस समिती का अध्यक्ष पद अम्बेडकर जी को दिया। इसका वर्णन महाकवि ने निम्नलिखित प्रकार से किया है -

"विधिमंत्री गये भीम वनाये | सकल देश में आनन्द छाये ||
एक मसौदा समिती वनाई | उन्तीस अगस्त दिवस बतलाई ||
लेख मसौदा संविधान का | अपने इस भारत महान का ||"[1]

सांप्रदायिक दंगे और बाबा :

भाग में महाकवि ने भारत देश में फैली सांप्रदायिकता का वर्णन किया है। इस सांप्रदायिकता के कारण लाखों स्त्री-पुरूषों की मृत्यु हो गई। इसके वाद महाकवि ने डॉ. अम्वेडकर के द्वारा निर्माण कर रहे संविधान का वर्णन किया है।

जीवन साथी की अनुभूति:

भाग में महाकवि ने डॉ. अम्वेडकर जी की वीमारी की जानकारी दी है। वीमारी के कारण अम्वेडकर जी को जीवन साथी की कमी महसूस होने लगी। इसी वजह से उन्होंने 15 अप्रैल को शारदा नामक डॉक्टर से विवाह किया।

---

[1]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम्, पृ.305

संविधान परिचर्या :

भाग में महाकवि ने डॉ. अम्बेडकर जी के छप्पन वे जन्मदिवस मनाने के लिए आयोजित भव्य सभा का वर्णन किया है। इसके वाद अम्बेडकर जी ने भाषा के आधार पर प्रान्तों की रचना करने की बात कही। दि. 26 जनवरी, सन् 1950 ई. को सार्वभौम प्रजातंत्र का निर्माण किया। इसके कारण अनेक लोगों ने डॉ. अम्बेडकर का अभिनंदन किया।

नवधर्मानुभूति :

भाग में महाकवि ने डॉ. अम्बेडकर जी के द्वारा अक्तूबर, 1948 ई. को तैयार किए हिंदूकोड बिल का वर्णन किया है। इसके बाद वे अध्ययन करते रहे। अध्ययन करते समय उनका ध्यान हिंदू धर्म की नारी की दशापर गया। इसका वर्णन महाकवि ने निम्नलिखित प्रकार से किया है -

"नारी आजै पाँव की जूती | बाज रही पुरूषों की तूती ||
नारी का शोषण होता है। देखि हृदय को दुख होता है ||
हिंदू जन विष बेल बतायें | धर्मग्रंथ सदियों से गाये ||
बिन त्रुटि नारी पीटी जाये | पुन: पुरूष की दास कहायें ||
पुरूष प्रधान समाज बनाया | नारी का अपमान सवाया ||"[1]

इसके बाद अम्बेडकर ने दि. 5 मई को मुंबई में आने के बाद बौद्ध धर्म अपनाने की घोषणा की | तथा 25 मई को अपनी पत्नी के साथ बौद्ध धर्म का अध्ययन करने के लिए लंका गये |

हिंदू कोड बिल और बाबा :

भाग में महाकवि ने हिंदू कोड बिल के बारे में हुई चर्चा का वर्णन किया है। इसका अनेक लागों ने विरोध किया। इसी कारण डॉ. अम्बेडकर जी ने कोड बिल को वापिस लिया और विधिमंत्री पद को त्याग दिया।

---

[1]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम्, पृ.327

16377

बाबा पुन: विपक्ष में :

भाग में महाकवि ने डॉ. अम्बेडकर के द्वारा विधिमंत्री पद को त्यागने के कारण उसपर समाचार पत्रों ने अपने मत प्रस्तुत किए इसका वर्णन किया है। इसके वाद के चुनाव में काँग्रेस की भ्रष्टनीति के कारण उनको हार का सामना करना पड़ा। वाद में डॉ.अम्बेडकर जी को दि. 1 जून, सन् 1952 ई. को न्यूयार्क से मानक डिग्री, कोलम्बिया विश्वविद्यालय से डॉक्टर ऑफ लॉ की उपाधि और हैदराबाद विश्वविद्यालय से डी. लिट. की उपाधि प्रदान की गई। इसके बाद वे विपक्ष में रहकर अपना कार्य करने लगे।

नई सरकार एवं बाबा :

भाग में महाकवि ने अम्बेडकर जी के द्वारा किए कार्यों एवं सत्याग्रहों का वर्णन किया है। इसमें उन्होंने भूमि हीन दलितों को जमीन दिलाने का कार्य किया। साथ ही दलित युवकों को मुफ्त शिक्षा तथा छात्रवृत्ति मिले इसके लिए सत्याग्रह किया।

इस प्रकार की सारी वातों का वर्णन महाकवि निमेश जी ने प्रस्तुत स्कन्ध में किया है।

3.9 नवम् स्कन्ध :

प्रस्तुत स्कन्ध का प्रारंभ महाकवि निमेश जी ने स्तुति से किया है। इसके बाद उन्होंने सिद्धार्थ गौतम बुद्ध और वोधिसत्व डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर जी को नमन किया है।

विदेश नीति और बाबा साहब :

भाग में महाकवि ने डॉ. अम्बेडकर जी के सांसद वनने की इच्छा का वर्णन किया है। नागपुर की एक खाली सीट के लिए उन्होंने नामाकंन कर दिया। तथा निर्वाचन अभियान में देश-विदेश की नीति पर उन्होंने भाषण किया। लेकिन वे विपक्ष की कूट नीति के कारण हार गए। इसके बाद महाकवि ने भारत देश की स्थिति का वर्णन निम्नलिखित प्रकार से किया है -

"भारत की स्थिति वतलाई | घिरी चर्तुदिक सीमा भाई ||

पश्चिम पाक घेरकर वैठा | उत्तर लहासा चीन समेटा ||

हिमगिरी पार चीन करि आया | भारत की सीमा पर छाया |

पूरव में भी पाक बिठाया | भारत का संकट समझाय ||"[1]

अनुसूचित जाति, जनजाति आयुक्त और बाबा साहब :

भाग में महाकवि ने दि. **6** सितम्बर को अनुसूचित जाति, जनजाति के हित के लिए बनाए गए कानून संबंधी जानकारी का वर्णन किया है। दि. **3** अक्तूबर को अम्बेडकर जी ने दलितों को समानता का ज्ञान दिलाने का प्रयास किया।

बौद्ध धर्म का पुनरूत्थान :

भाग में महाकवि ने डॉ. अम्बेडकर जी द्वारा बौद्ध धर्म अपनाने की बात का वर्णन किया है। साथ ही मार्च, सन् **1955** ई. को बौद्ध धर्म पर आधारित ग्रंथ के निर्माण का प्रारंभ किया। उसी समय अम्बेडकर को अन्य धर्मों के धर्मगुरूओं ने अपने धर्म की ओर आकृष्ठ करने का प्रयास किया। इसका वर्णन महाकवि ने निम्नलिखित प्रकार से किया है -

"तन, मन, धन से करै सहाई | शक्ति आपकी बढ़े सवाई ||

प्रचुर प्रलोभन गये दिखाये | इस्लामी गुरू दौड आये ||

करि मनुहारि भीम समझाये | मुसलमान बनि शक्ति बढ़ाये ||

शिक्ख नेता प्रस्ताव सुनाया | समता का निज धर्म बनाया ||"[2]

इसके बाद बौद्ध धर्म के परिशोधन के रूप में अम्बेडकर जी ने 'बुद्ध अँड हिज धम्म' ग्रंथ का सृजन किया। वाद में मुंबई में बुद्ध जयंती के अवसर पर अक्तूवर महिने में बौद्ध धर्म अपनाने की वात की।

बाबा-धर्म परिवर्तन की तैयारी :

भाग में महाकवि ने डॉ. अम्बेडकर जी के द्वारा दि. **14** अक्तूवर, सन **1956** ई. को नागपुर की दीक्षा भूमि पर धर्म परिवर्तन करने की घोषणा का वर्णन किया है।

---

[1]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम्, पृ.**358**

[2]. वही, पृ.**369**

विजयादशमी का धर्मोत्सव :

भाग में महाकवि ने नागपुर की दीक्षा भूमि पर आए अम्बेडकर जी के अनुयायियों का वर्णन किया है। तथा डॉ. अम्बेडकर जी ने बौद्ध धर्म के महान भिक्खु महास्थविर चन्द्रमणी जी से दीक्षा लेकर बौद्ध धर्म का उद्धार किया।

महाभिमान :

भाग में अम्बेडकर जी ने बौद्ध धर्म की दीक्षा लेने के बाद अनेक लोगों ने बधाई पत्र भेजकर उनका अभिनंदन किया। तथा दि. 15 तारीख को विशाल सभा का आयोजन करके डॉ. अम्बेडकर जी को महामान दिया। उस सभा में सेठ, साहूकार, नेता आदि के सामने उन्होंने देश की राजनीतिक स्थिति की जानकारी दी।

कार्ल मार्क्स और बुद्ध :

भाग में महाकवि ने एक सभा में लोगों की इच्छा के अनुसार किए भाषण 'कार्लमाक्स और बुद्ध' इसका वर्णन निम्नलिखित प्रकार से किया है -

"हमने तो सर्वोत्तम जग जाना | बुद्ध देव जो धर्म बखाना ||
मानव दु:ख निरोध बनाया | कार्लमार्क्स ने लक्ष बनाया ||
लक्ष एक दोनों का भाई | मार्क्स सम्पदा मूल बताई ||
शोषण, पीड़ा, दुखद बताया | वर्गवाद सम्पति से आया ||"[1]

इसके बाद अम्बेडकर जी ने बौद्ध धर्म के तत्व हिंसा न करना, चोरी न करना, व्याभिचार न करना, सामिष भोजन न करना तथा मिथ्याचार न करना आदि बातों की जानकारी लोगों को दी।

बौद्ध दर्शन बोध :

भाग में महाकवि ने बौद्ध दर्शन के दु:खवाद को समझाया है। तृष्णा दु:ख का मूल कारण है। उसके अनेक रूप होते है। वह काम, क्रोध आदि रूप के द्वारा लोगों को सताता है। इसका वर्णन महाकवि निमेश जी ने इस प्रकार किया है -

---

[1]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम्, पृ.393

"पति, पत्नी, सुत, सुता हमारी | तात, मात, भ्राता दु:ख भारी ||
ममता मोह सदा उपजायें | विछुड़त, मिलत सदाँ दु:ख पाये ||
धन वैभव सम्पति की इच्छा | राज, पाट दारिद्र समीक्षा ||
स्वाभिमान अरू दर्प सताये | कुल जाति अभिमान सताये ||"[1]

महापरिनिर्वाण :

भाग में महाकवि ने डॉ. अम्बेडकर जी के निर्वाण संबंधी घटनाओं का वर्णन किया है। इसके बाद उनका पार्थिव विमान से मुंबई लाया गया। और उनके पुत्र यशवन्तराव के द्वारा बौद्ध विधि से संध्या साडे सात बजे अंत्यसंस्कार किए। उनकी मृत्यु के संयोग दिन का वर्णन महाकवि ने इस प्रकार किया है -

"सांची भगवान बुद्ध की आठ दिवस तक गयी मनायी ||
ढाई सहस्रा बुद्ध जयंती, सात दिसम्बर पूर्ण कहायी ||
उसी दिवस संयोग महत्तम बोधिसत्व मुक्ति पायी।
पवन, गगन, जल, अवनि अगिनि सवनिज रूप समायी ||"[2]

श्रद्धांजलियाँ एवं सम्मतियाँ :

भाग में महाकवि ने डॉ. अम्बेडकर जी के निर्वाण के बाद मनाए शोक संदेश का तथा पत्र-पत्रिकाओं ने उनके द्वारा किए कार्यों की जानकारी का वर्णन किया है।

महापरिनिर्वाणोत्तर :

भाग में महाकवि ने डॉ. अम्बेडकर जी के निर्वाण के वाद उनके अनुयायिओं के द्वारा मुंबई में स्मारक बनाने के संकल्प का वर्णन किया है। इसकी वजह से मुंबई के दादर इलाके में ग्यारह एकड़ जमीन पर भव्य स्तुप और चैत्यभूमि का निर्माण किया। तथा सचिवालय और संसद के परिसर में उनका स्मारक वनाया गया। आदि सारी घटनाओं का वर्णन महाकवि ने नवम् स्कन्ध में किया है।

---

[1]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम्, पृ.397
[2]. वही, पृ.410

नवम् स्कन्ध के खत्म होने के वाद महाकवि ने महाकाव्य के अंत में डॉ. अम्वेडकर जी के कार्यों पर आधारित आरती का सृजन किया है।

निष्कर्ष :

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि, 'भीमकथाअमृतम्' महाकाव्य का सृजन महाकवि निमेश जी ने भारतरत्न डॉ. बाबासाहब अम्वेडकर जी के जीवन पर आधारित किया है। प्रस्तुत महाकाव्य की कथावस्तु का विभाजन नौ स्कन्धों या सर्गों में किया है।

प्रथम स्कन्ध के अंतर्गत महाकवि ने डॉ. अम्बेडकर जी को वन्दन किया है। भारत देश की प्राकृतिक शोभा का सुंदर एवं मनोहरी रूप से वर्णन किया है। डॉ. अम्बेडकर जी की पारिवारिक पृष्ठभूमि का वर्णन किया है। द्वितीय स्कन्ध में भारत देश की समाज व्यवस्था की जानकारी दी है। तथा डॉ. अम्बेडकर जी के द्वारा प्राप्त की शिक्षा का वर्णन किया है। तृतीय स्कन्ध में समाज में वर्णित जाति व्यवस्था का वर्णन किया है। तथा डॉ. अम्बेडकर के द्वारा किए महाड तालाब सत्याग्रह और अम्बादेवी मंदिर प्रवेश सत्याग्रह का वर्णन महाकवि ने किया है।

चतुर्थ स्कन्ध के अंतर्गत महाकवि ने डॉ. अम्बेडकर जी के द्वारा किए संघर्ष का वर्णन किया है। तथा प्रथम गोलमेज सम्मेलन की जानकारी दी है। पंचम स्कन्ध में द्वितीय गोलमेज सम्मेलन की जानकारी दी है। तथा डॉ. अम्बेडकर जी के विचारों का और पूना पैक्ट की बातों का वर्णन महाकवि ने किया है। षष्ठम स्कन्ध में तीसरी गोलमेज सभा का वर्णन मिलता है। डॉ. अम्वेडकर की पत्नी का निधन और मुंवई विधान सभा के चुनाव से संवंधित जानकारी का वर्णन मिलता है।

सप्तम स्कन्ध में सर्वोच्च कार्यकारिणी के सदस्यों की जानकारी, तथा डॉ. अम्वेडकर जी के द्वारा निर्माण की 'पिपल एज्यूकेशन संस्था' का वर्णन महाकवि ने किया है। अष्टम स्कन्ध में देश में फैले साम्प्रदायिकता का वर्णन मिलता है। इसके साथ डॉ. अम्वेडकर के द्वारा निर्माण किए संविधान की जानकारी का वर्णन महाकवि ने किया है।

नवम् स्कन्ध में डॉ. अम्वेडकर जी के द्वारा निर्माण किए बौद्ध धर्म ग्रंथ की जानकारी मिलती है। तथा दि. 14 अक्तूबर, सन् 1956 ई. को डॉ.अम्वेडकर ने बौद्ध धर्म की दीक्षा ली। इसके वाद उनके महापरिनिर्वाण का वर्णन महाकवि ने किया है।

इस प्रकार महाकवि रामदास निमेश जी ने डॉ. अम्वेडकर जी का जन्म, शिक्षा, दीक्षा उनके सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक जीवन में आए उतार-चढ़ाव का लेखा जोखा प्रस्तुत महाकाव्य में किया है।